शब्दों की कहासुनी

शोरगुल

शब्दों की कहासुनी

कमल उपाध्याय

लेखकीय

मेरी पिछली किताब “लंकापति का लोकतंत्र” और “ईलू” को आप लोगों ने जो प्यार और सम्मान दिया, उसके लिए मैं आपका बहुत - बहुत आभारी हूँ।

शोरगुल में मैंने अपनी उन भावनाओं को पिरोया है जो शायद मैं कभी किसी से कह नहीं पाता। कुछ शब्द हैं, कुछ अल्फ़ाज़ हैं जिन्हें मैं आपको यहाँ सौंप रहा हूँ।

धन्यवाद

कमल के लेखों में मासूम और मनोहर भाव देखने को मिलते हैं। समय के साथ कमल ने अपनी लेखनी को जिस तरह धारदार बनाया है, उसकी जितनी भी प्रशंसा हो कम है।
~ शशि थरूर
सांसद, पूर्व राज्यमंत्री **&** लेखक

* * *

कमल की पैनी नज़र और सुंदर भाषा ना सिर्फ़ उनके लेखों को मज़ेदार बनाते हैं बल्कि उन्हें एक साहित्यिक दर्ज़ा भी दिलाते हैं। खुशी है कि हिंदी में आज भी इस तरह का नया काम हो रहा है।
~ वरुण ग्रोवर
स्य कलाकार, पटकथा लेखक **&** गीतकार

* * *

कमल से जितनी बार मिला हूँ उतनी बार उनकी किसी नई प्रतिभा से परिचित होने का मौका मिला है।दिल से कमल हैं तो कलम से कमाल हैं।
~ अशोक श्रीवास्तव
वरिष्ठ पत्रकार

प्रकाशित किताबें

लंकापति का लोकतंत्र
(पौराणिक किरदारों पर आधारित व्यंग्य)

* * *

लालसा
(साइको किलर की कहानी)

* * *

हत्या
(मर्डर मिस्ट्री)

* * *

मिठाई
(सामाजिक पर कटाक्ष)

* * *

ईलू
(एक चिड़िया के साहस और संघर्ष की कहानी)

CONTENTS

१. कुछ रिश्ते जलाने पड़े

चाँद भी कंबल ओढ़े निकला था
सितारे ठिठुर रहें थे
सर्दी बढ़ रही थी
ठंड से बचने के लिए
मुझे भी कुछ रिश्ते जलाने पड़े।
कुछ रिश्ते
जो बस नाम के बचे थे
खींच रहा था
मैं उनको
कभी वो मुझे खींचा करते थे।
सर्दी बढ़ रही थी
ठंड से बचने के लिए
मुझे भी कुछ रिश्ते जलाने पड़े।
कुछ रिश्ते
बहुत कमजोर हो चले थे
उनकी लपट भी बहुत कम थी
कुछ इतने पतले
की जलने से पहले राख हो गए।
सर्दी बढ़ रही थी
ठंड से बचने के लिए
मुझे भी कुछ रिश्ते जलाने पड़े।
कुछ पुराने रिश्ते थे
मेरे जनम के पहले के
सजोया था उन्हें मैंने
उन्हें नही था कोई लगाव मुझसे।
सर्दी बढ़ रही थी
ठंड से बचने के लिए
मुझे भी कुछ रिश्ते जलाने पड़े।

२. बाज़ार चहकता था हर शाम

जो बाज़ार चहकता था हर शाम
आज कुछ सुनसान सा लग रहा है।
गोलगप्पे की दुकान का ठेला
जलेबी वाले के चुल्हे पर से बर्तन
चाय पे चुस्कियाँ लेते लोग
कोई भी आज नजर नहीं आ रहा ।
नालीयों में लाल रंग बह रहा है
पता चला रंग नहीं
पता चला रंग नहीं
हिन्दू - मुसलमान का खून है।
कल धर्म के नाम पर फसाद हुआ
सुनता हूँ
वो जलेबी वाला मीयां था
गोलगप्पे वाला हिन्दू था
मुझे कैसे पता चलता
जलेबियो ने कभी अज़ान नही थी पढ़ी
गोलगप्पो ने कभी गीता नही सुनाई।
जो बाज़ार चहकता था हर शाम
आज कुछ सुनसान सा लग रहा है।

३. वो रास्ता

चलते जाता हूँ
उसकी बाहें थामे
वो थकता नहीं
मैं रुकता नहीं हूँ
बचपन से साथ हूँ
बदले है रंग कई
उसने और मैंने
वो पत्तो से लदा हुआ
कभी धुप में
जलता हुआ
बरसात में न चाहे
भीगता हुआ
वो रास्ता
जो मेरे
घर से निकल कर
दूर जंगलो में
जाता है
वो आज भी
तन्हाई में
मेरा साथ निभाता है।
उससे बचपन की
कितनी यादें जुड़ी हैं
मेरे पैदा होने पर
वो मिटटी का था
वो मुझको पटकता
मैं उसे पटकता था
अकसर आप धापी
में हम दोनों लाल पीले
हो जाते थे
एक बार जोर से
पटक दिया था
मैंने उसे
कुछ खरोंचे

आई मुझे
उसकी भी
कलाई छिल
गयी थी
दोनों मिलकर
साथ चीखे थे
वो रास्ता
जो मेरे
घर से निकल कर
दूर जंगलो में
जाता है
वो आज भी
तन्हाई में
मेरा साथ निभाता है।
मेरे साथ वो भी
कपड़े बदलने लगा
लाल से पीला
पीले से ईंटे का
ईंटे से पत्थर का
पत्थर से डामर का
हो गया
बदलते समय के
साथ मैं और रास्ता
बदल गया
लेकिन
लेकिन
हम आज भी
साथ चलते हैं
वो रास्ता
जो मेरे
घर से निकल कर
दूर जंगलो में
जाता है
वो आज भी
तन्हाई में
मेरा साथ निभाता है।
इस बार जब

उससे मिलने गया
तो बड़ा दुःखी था वो
कहता है
पुरानी डामर सूखती
नहीं
ये नई उड़ेल देते
तेरी सुर्ख यादो को
खनकर
कही ढकेल देते हैं
वो रास्ता
जो मेरे
घर से निकल कर
दूर जंगलो में
जाता है
वो आज भी
तन्हाई में
मेरा साथ निभाता है।

४.कब्र में जिंदा हूँ

क्यों नही सोने देते मुझको
जब जिंदा था तब पर भी यही करते थे
यहा तो सुकूं दो मुझे
हर रोज चले आते हो दफनाने
एक मुर्दा लाश को जिंदा कर जाते हो।
अभी तो गला नही मैं पूरी तरह
सुना है कुछ दिन में
खोदकर मुझको
एक छोटे बक्से में भर दोगे
अब तो
मुर्दों को भी चैन की सांस ना लेने दोगे।
वो जो क्रॉस
मेरे सीने पर लगाया है
हठा दो उसे
चुभता है मुझे
करवट भी नही ले पाता मैं
क्योंकि जगह कम है यहाँ।
पड़ोस की कब्र में
एक नया मुसाफिर आया है
बड़ा खुश मिजाज है
कहता है ये जिंदगी
जीने मे बड़ा मजा आ रहा है।
अब मनाकर दो लोगों को
ना जलाया करें मोमबत्ती
उसकी पिघलती बूँदें
जब गिरती है मेरे ऊपर
तो छाले निकल आते हैं।
चलो अब चलता हूँ
आज सारी रात
जागकर काट दी
अब कुछ देर
कब्र में आराम करता हूँ।

५.क्या होगी पेड़ों की जात

क्या होगी पेड़ों की जात
कभी सोचा है आपने?
वो आम का पेड़
जो हवन में जलता है
बाभन होगा
क्योंकि
उसके पत्तों की पूजा भी होती हैं
फल भी खुब रसीला मंत्रो की तरह।
बबूल का पेड़ छाया नहीं देता
उसके कांटें चुभ जाए तो दर्द होता है
और खुन निकलता है
लेकिन बड़ा मजबूत होता है
बबूल शायद ठाकुर होगा।
बनिया तो महुआ होगा
उसके पत्तों से पत्तल बनती हैं
रसीले फल आंटे में
मीजकर गुझिया बनाते हैं
सुखाकर उसके फल दुकान पर बेच देते हैं
तेल भी मिलता है महुए की कोईय्या से
लकड़ी तो उसकी बड़े काम आती हैं।
कुछ पेड़ है
जो जल्दी जल्दी बढ़ते हैं
उनकी लकड़ी जलावन बनती हैं
अमलतास मेरा हरिजन होगा
बस बढ़ता है और कटता है
उसके कटने पर किसी को दु:ख नही है होता।

६.वो जो एस्ट्रोनॅाट चाँद से आए हैं

वो जो एस्ट्रोनॅाट
चाँद से आए हैं
पता नही कहा से
झूठी तस्वीरें लाए हैं।
कोई बता दो उनको
कोई बता दो उनको
मेरा चाँद कैसा दिखता है
कभी देखना पूनम की रात में
एक धुंधली धुंधली सी
छवि नजर आएगी
जैसे कोई बच्चा माँ
से लिपटा हो।
वो जो एस्ट्रोनॅाट
चाँद से आए हैं
पता नही कहा से
झूठी तस्वीरें लाए हैं।
कहते हैं चाँद मरुस्थल हैं
अरे मैंने तो कई रातें
चाँद पर बरसात
देखकर गुजार दी
एक रात बाढ़ आ गई
चाँद पर
सुबह गीला तकिया
मैं ने धूप में सूखाया था।
वो जो एस्ट्रोनॅाट
चाँदसे आए हैं
पता नही कहा से
झूठी तस्वीरें लाए हैं।
चाँद की बदलती
चाँदनी से कई दिल जुड़े हैं
वो चाँद की अठखेलियों को
कोई विज्ञान बताते हैं
कहते हैं एक उपग्रह है

अरे हम तो बचपन
से उसे मामा कहते हैं।
वो जो एस्ट्रोनॉट
चाँद से आए हैं
पता नहीं कहा से
झूठी तस्वीरें लाए हैं।
वो जो लजा के
पल भर के लिए
छुप जाता है
उसे तुम चंद्र पर
ग्रहण कहते हो
तुम्हें क्या पता
कैसे गुजारता हूँ मैं
अमावस की रातें
बिना उसके।
वो जो एस्ट्रोनॉट
चाँद से आए हैं
पता नही कहा से
झूठी तस्वीरें लाए हैं।
मुझे लगता किसी
गलत पते पर चले गए थे
एस्ट्रोनॉट
और
चाँद से है
इनकी पुरानी दुश्मनी कोई
इसलिए सारा दोष चाँद को देते हैं।
वो जो एस्ट्रोनॉट
चाँद से आए हैं
पता नही कहा से
झूठी तस्वीरें लाए हैं।

७. चलो फिर एक नया मज़हब बनाएँ

चलो फिर एक नया मज़हब बनाएँ
कुछ और लोगों को बांटे आपस में
बढ़ाएं रंजिशें उनकी
उकसाएं लोगों को कत्लेआम के लिए
कुछ मरेंगे
कुछ लहूलुहान होंगे
चिंगारी जलती रहेगी
पीढ़ी दर पीढ़ी
एक दूसरे को नीचा दिखाने की।
कुछ और खुदगर्ज कूद पड़ेंगे
इस रंजिश के खेल में
सेकेंगे रोटियां
मय्यत की चिंगारी पर
आग बुझ गई तो
मजार के
दीये से फिर जला देंगे
जलाकर घर हमारा
अपना महल रोशन करेंगे।
बीत जाएँगी कई पीढ़ियाँ
भूल जाएँगी कारण आपसी लड़ाई का
धर्म गुरु फिर उठेंगे
सीख देंगे धर्म रक्षा का
कहेंगे लड़ मरो
अपने धर्म के लिए
लेकिन
कभी स्वयं धर्म की रक्षा के लिए लड़ने ना आएंगे।
चलो फिर एक नया मज़हब बनाएँ
कुछ और लोगों को बांटे आपस में।

८.जलती सिगरेट

जब कभी तुम
सिगरेट जलाने की
कोशिश करते थे
मैं फूँक मारकर
बुझा देती थी।
कितनी बार कहा था
तुमसे
ये जिंदगी
सिर्फ तुम्हारी नहीं है
मेरा जो दिल है
वो तुम्हारे सिगरेट के धुंए
से खराब हो रहा है।
ऐश ट्रे में बढ़ती राख
से जिंदगी मेरी
स्याह हुई जाती है
बुझाया करो इन्हे
जलाने से पहले
एक कश जिंदगी का
बुझी हुई सिगरेट से लगाना।
मैंने संजोकर रखें हैं
कुछ पुराने डिब्बे सिगरेट के
जिस पर हमने
जिंदगी का प्लान बनाया था
वो सिगरेट ख़राब हो गई है
लेकिन प्लान अभी भी
संजीदा लगता है।
अब ना जलाना सिगरेट
अब मैं वहाँ नहीं हूँ
जलती सिगरेट बुझाने को।

९.समंदर की कुछ बूंदों से बात की

समंदर की कुछ बूंदों से बात की
वो भी अपने वजूद को लेकर व्याकुल हैं
विशाल समंदर में कहाँ कोई उनकी है सुनता
जबकि उनसे ही समंदर है
उनके बिना समंदर बस मरुस्थल है।
बूंदें दिन रात प्रयत्न करती हैं
एक बूंद दूसरे को आगे ढकेलकर
समंदर का वजूद कायम रखती हैं
उनको एहसास है अपने होने का
लेकिन
समंदर हर बार इस बात को भूल जाता है।
सोचों अगर बूंदें विद्रोह कर दें
बनाकर दोस्त सूरज को
ऊपर आकाश में बादल से मिल जायें
हो सकता है दोस्ती धरा से कर लें
उसके गर्त में समा जायें
सूख जायेगा समंदर
बूंदों का वजूद तो हमेशा बना रहेगा।
समंदर को अभिमान किस बात का
क्या पता ?
क्या उसे नही पता?
किसने किया उसका वजूद कायम
मिट जायेगा एक दिन
बस बूंदों को कदम विद्रोह का उठाना है।

१०. समय को अटका दिया

कलाई की घड़ी को
आज बड़े प्यार से उतारा
और उसकी कुंजी को खींचकर
एक असफल प्रयास किया
घड़ी को रोकने का।
फिर भी जब ना मानी घड़ी
तो
चटकाकर उसका कांच
कुछ घावों से
उसकी एक सूई को तोड़ दिया
घड़ी भी जिद्दी किस्म की है
रुकने का नाम नही है लेती।
कितना मुश्किल है
वक्त को पकड़कर रखना
या बांधना उसे किसी वाकिये के साथ
कुछ बिगड़ेगा क्या उसका
यदि वो कुछ देर ठहर जाएगा तो।
आखिर में एक सूई को
पकड़कर मोड़ दिया
कुछ इस तरह की
अटक जाये वो वक्त वही
मैं उन लम्हों को महसूस करता रहूँ।
वो लम्हा जहाँ मैं कुछ भी नही
लेकिन गम भी नही
मेरे कुछ ना होने का
अब अटाकर समय को
मैं मौज मनाऊँगा।

११. बादल आज कई दिनों के बाद रोया

दूर गगन में कहीं था अब तक खोया
बादल आज कई दिनों के बाद रोया
बदल रोता मै मुस्कुराता हूँ
वो गम बताता मै खुशिया मनाता हूँ
बादल के आँसू ने सारा जग भिगोया
बादल आज कई दिनों के बाद रोया।
अब बादल रोता मै हँसता नहीं था
उसके आँसू पर मज़ा कसता नहीं था
बादल के आँसू ने हरियाली का मंजर लाया
सपनो सा था दर्पण जग को आँसू ने चमकाया
बादल ने जैसे रोने की जिद थी ठानी
उसके आँसू धरती पर कर रहे थे मनमानी।
अब बादल रोता तो मै भी रोता हूँ
अपने सपने उसके आँसुओं से भिगोता हूँ
हरियाली का मंजर जैसे उजड़ा कही खोया
बादल आज कई दिनों के बाद रोया।
कुछ महीने बीते बादल मान गया
अपने आँसू को थामना जैसे जान गया
अब बदल मुस्कुराता
मै मुस्कुराता हूँ
रोने पर किसी के न हँसना सबको समझाता हूँ
दूर गगन में कही था अब तक खोया
बादल आज कई दिनों के बाद रोया।

१२. तेरे बिन गुलज़ार

यदि जो ना गुथते
लफ़्ज़ों को
उनकी आत्मा से
सोचो क्या होती
उनकी हालत
तेरे बिन गुलज़ार।
वो नज़्में
जो तैरती है सतह पर
कभी थककर
किनारे बैठ जाती हैं
वो डूबकर
कैसे उभरती
तेरे बिन गुलज़ार।
वो मिशरे
जो तुमने गिरह से खोलें थे
पीसकर जिस रेख़्ते को
तुमने गज़ल बनाई थी
वो लबो पर कैसे आती
तेरे बिन गुलज़ार।
पोटली वाले
बाबा की मासूमियत
बोस्की के पंचतंत्र में
बचपन को
फिर से जगाना
वो चूहिया
कैसे बचती चील के चंगुल से
तेरे बिन गुलज़ार।
वो सितारों से
हमारी मुलाकाते
और
हमने तो अँधेरे को
अँधेरा ही समझा था
उसमें

सुर्ख रोशनी का एहसास
कौन कराता
तेरे बिन गुलज़ार।
वो नग़मे तुम्हारे
जो सुनाकर
उनके बोसे लेता था
कैसा करता
इज़हारे मोहब्बत
तेरे बिन गुलज़ार।
देखा है पानी
हम सब ने
समझते थे
उसमे रंग नहीं होता
कौन बनता
पानी को सतरंगी
तेरे बिन गुलज़ार।
वो दर्द
जो चुभते थे
तनहा रातों में
उन्हें शहद सा मीठा
कौन करता
तेरे बिन गुलज़ार।
दुआ है मेरी
तू जिए हजारों साल
होंगी नीरस
वो गज़ल की गालियाँ
वो नज़्मों का लिहाफ
तेरे बिन गुलज़ार।

१३. नज़्म का खयाल

कल रात
एक नज़्म का खयाल आया था
मैं लिखता
उन्हें किसी पन्ने पर
उससे पहले
वो दफना कर मुझको चली गई।
सुबह से कोशिश कर रहा हूँ
कुछ लफ्ज़
यदि याद आ जाएं
तो नज़्म को जैसे तैसे पूरा कर लूंगा।
लिख दूंगा तुम्हारी कुछ
कभी ना हुई मुलाकातें
वो सपने जिसमें
हम दिनभर बगीचों में घूमा करते थे।
नज़्म शुरू हुई तो खतम भी होनी है
तुम्हारी निकाह की रात
और
मेरा तारों को गिनते गिनते उंगली जला लेना।
कबूल थी मुझे तुम
और
मैं भी तुम्हें कबूल था
बस वो मौलवी पढ़ न सका
हमारा निकाहनामा।
तुम्हें यकीन था
हम जरुर मिलेंगे
मुझे यकीन है नज़्म
मुझसे जरुर मिलेगी।
सुना है खुश हो
अपने शौहर के साथ उस महल में
अच्छा ही हुआ
मेरे यहाँ बस इतनी सी जगह है
या तो नज़्म सो जाए
या मैं पसर सकता हूँ।

अभी रात बाकी
नज़्म आज आएगी
हो सका तो
निकालेगी मुझे कब्र से
फिर सांसे लेकर नज़्म लिखूंगा।

१४.सितारे जागते रात भर

सितारों की ऐसी क्या मजबूरी होती है
जो उन्हें रात भर जागना पड़ता है।
चाँद को देखो मन का राजा
कला बदलता रहता है
कभी कभी कुछ घंटों के लिए निकलता है
और अमावस को तो पूरी छुट्टी कर लेता है।
लेकिन मिटाते है अंधियारा तिमिर का
रात को जो कमल सो नही पाते
सितारे ही तो उनका मन बहलाते हैं।
कुछ सितारों ने तो गिनती भी हमको सिखलाई
उन्हें ही गिनने के लिए तो शून्य का निर्माण हुआ
और बना दिए आंकड़े अरब-खरब तक हमने।
सितारों का रात को दिखना भी जरूरी है
नही तो भूले - भटके लोगों को
घर तक कौन ले जाता।

१५. लिखते गए यादों को

लिखते गए यादों को
एक कोरे पन्ने पर
पलट कर देखा
कुछ भी लिखा नहीं था।
दोष किसका है
उस कलम का जिसने लिखा नही
या स्याही जो कोरे रंग की थी।
शायद खयाल भी दोषी होंगे
बड़े हल्के और बारीक थे
कुछ गाढ़े होते तो
कोरी स्याही से भी छप जाते।
उस नीब को क्या कहना
जिसका चलना दुसवार था
खरोंच तो सकती थी
कुछ शब्दों को पन्ने पर।
अब इन कोरे कागजों को
दफनाने का जुर्म करना है
शायद जाग जाए
कब्र के अंधेरे में
जैसे उस दिन सियाह रात में
आकर छू गए थे।
लिखते गए यादों को
एक कोरे पन्ने पर
पलट कर देखा
कुछ भी लिखा नही था।

१६. मेरा साया

अंधेरे में एक साया दिखता है
शायद मैं ही हूँ
पर शकल नही मिलती
जब भी लाइट जलाकर
आईने में निहारता हूँ
तो
कहीं लापता हो जाता है।
खूब खेलते हैं
हम दोनों आपस में
कभी कभी तो
बल्ब के उजाले
में वो चार हो जाते हैं।
हुबहू मेरी नक़ल करता
मेरे साथ उठता
मेरे साथ बैठता
सोता भी तभी है
जब सारे बल्ब बंद हो जाते हैं।
अब लगता है
वो मेरे साथ ही चलेगा
बढ़ेगा मेरे साथ ऊपर
मेरे साथ नीचे गिरेगा
शकल भले ना मिले मुझसे
वो मेरे साथ ही दफ़न होगा।

१७. चलो खरोंचकर एक लमहा निकालें

चलो खरोंचकर
एक लमहा निकालें
तराशे उसे
और खुशियों से भर दें।
वो पुरानी यादें
जो दबी पड़ी हैं
लहमे की कुदाल से
खनकर निकालें।
कुछ लमहे
जो घीसकर कमजोर हो गएँ
उन्हें तंदुरुस्ती की
थोड़ी कसरत कराएँ।
एक लमहा
जो बचपन में बिछड़ गया था
सुना है आज कल
वापस आ गया है।
वो लमहा लटक गया था
बाहों को धरकर
पुरवाई चलने पर
अभी भी दर्द होता है।
चलो खरोंचकर
एक लमहा निकालें
तराशे उसे
और खुशियों से भर दें।

१८. नज़्म जगा गई

कल रात
एक नज़्म जगा गई
कहती है कमल
अब मेरी ज़ानिब नहीं आते
वो जो बिछौना पुराना छोड़ गए थे
अब उसके चिथड़े होने लगे हैं।
याद आती है तुम्हारी
वो आधी रातों को जगकर
तुम्हारा मुझसे गुफ़्तगू करना
मुझे गुदगुदा कर जगाए रखना।
वो ढिबरी जो तुम जलाते थे
स्याह रातों में
बिना जले उसकी बाती
अब घटने लगी है।
चले आओ कमल
के अब कुछ दिन की जिंदगानी हैं
एक बार देख लूँ तुम्हें
तो अपने मरकज़ की तरफ बढ़ना हो।

१९. कुछ पल अंधेरों का देते हैं

उजाले तो हर कोई
अजुरी भरखकर रख लेता है
आओ मेरे साथ
कुछ पल अंधेरों का देते हैं।
काली स्याही फेंककर
कुछ उजली रातों को चमकाया है
सितारों से कहा
तुम कुछ देर के लिये
टिमटिमाना बंद करो।
चाँद की छुट्टी तो
पहले ही कर दी थी
अभी देर है
सूरज को निकलकर
प्रकाश का कोलाहल करने में
आओ मेरे साथ
कुछ पल अंधेरों का देते हैं।
कुछ उजले घाव हैं
आज उन्हें मरहम
अंधेरे का लगा देते हैं
कुछ खयालात हैं
जो अंधेरे के सर्द होने पर
आकर बैठते हैं मेरे पास
मुझसे गुफ्तगू करतें हैं
आओ मेरे साथ
कुछ पल अंधेरों का देते हैं।

२०. नज़्मों को चराने ले जाता है

गड़ेरिया भी हर रोज़
नज़्मों को चराने ले जाता है
हाँकता है उन्हें
कभी लाठी बजाता है
फुनगीयाँ हरी हरी तोड़कर
नज़्मों को खिलाता है।
टहनियाँ पेड़ की पत्तेदार
जो लटकती है
लेकिन नीचे नही गिरती
उन्हें लग्गी से खींचकर
नीचे गिराता है।
कुछ नज़्में
अब रौबदार हो गई हैं
उनके लफ़्जों को
अब निकालकर
एक ऊन का गोला बनाएगा
फिर उससे बनेगी
एक मखमल सी मुलायम स्वेटर
जिन्हें ठंड के दिनो में पहनकर
वो नज़्मों को दूर तक चराएगा।

२१. गर बोलियाँ एक सी होती

सोचो गर बोलियाँ एक सी होती
कितनी सरल-संजीदा जिंदगी होती।
हम सब भी कोयल की तरह कूंक भरते
कभी कौए की तरह काँव काँव चिल्लाते।
हम सुनते-समझते सभी जीवों को
सभी के दु:ख को पार लगाते।
कटते पेड़ आह जो भरते
हमको व्यथित कर जाते।
झरने की कलरव से पहाड़ की कथा समझ पाते
भरकर पानी अपनी चुल्लू में कुछ मदद उसे कर आते।
घूमते दुनियाँ जी भर के
सभी को अपनी बोली से प्यार जताते।
कुछ तो बंट गई है मानवता
इन बोलियों की विविधता से।
हम दूर देश में खाना बदोश हो जाते
सबके मनोरंजन का लुत्फ उठाते।
कुछ तो बंद हो जाते झगड़े
भाषा के नाम पर जो होते हैं।
हँसते-गाते मौज उठाते
जीवन को आनंद बनाते।
सोचो गर बोलियाँ एक सी होती
कितनी सरल-संजीदा जिंदगी होती।

२२. कल रात ख़्वाबों में

कल रात ख़्वाबों में
ग़ालिब से मुलकात हो गई
बातें वही पुरानी
बल्ली मारा के मोहल्लों की
अगरचे बदले नहीं ग़ालिब
बस अब थोड़ा झुककर चलते हैं।
उनके साथ चलकर
पुरानी दिल्ली तक पहुँचा
खड़े मिले वहीं प्रेमचंद
ज़िक्र करते
लखनऊ की गलियों के
कहानी उन्होंने खूब सुनाई
बुधिया और घीसू की।
अचानक से नज़्म कानों में पड़ी
मुंबई की गलियों में था मैं
खड़े गुलज़ार बयां कर रहें थे
आबशारों के अहसास करिने से
सुनाते गिलोरी की ज़ुबान में
किस्से दीना के।
कल रात ख्वाबों में
ग़ालिब से मुलकात हो गई
कल रात ख्वाबों में
प्रेमचंद से बात हो गई
कल रात ख्वाबों में
गुलज़ार से किस्सागोई हुई।
कल रात ख़्वाबों में ।

२३. अल्फ़ाजों में खोई नज़्म

नज़्म एक लिखी
कई बार मिटाई
सारे अल्फ़ाज़ हैं परेशान
पूछते हैं
क्या लिखना चाहते हो कमल?
अब क्या बताऊँ उन्हें
अपने मिश्रे सुलझा रहा हूँ
लिखकर मिटाना नही आता मुझे
मिटाकर अल्फ़ाजों के दाब बना रहा हूँ।
वो नज़्म जो
उस रात सपने में आई थी
अल्फ़ाज़ों से लबरेज थी
और लज्ज़त ऐसी जैसे पान में लगा किमाम।
खो गई है नज़्म मेरी
अल्फ़ाज़ों ने उसे घेर रखा है
मैं तो इतना कहूँगा बस
सुनो अल्फ़ाज़ों जो परेशान हो तो
लौटा दो मुझे मेरी नज़्म।

२४. पत्तों का खाक होना

आज टहनियों से टूटते पत्ते
कुछ गुनगुना रहें थे
अभी जमीं पर गिरे नहीं
लेकिन कब्रगाह का ज़िक्र था।
टहनियों ने भी शोर मचाया
कहा
कब्र नही चिता बनेगी
टहनियों ने भी सीख लिया
कब्र और चिता का फरक।
मजहबी रंग इंसानियत से
अब आगे बढ़ निकले हैं
टहनियों और पत्तों ने भी
अब अपना मजहब चुन लिया है।
कुछ पत्ते काफ़िर हैं
कहते हैं
ना चिता बनेंगे
ना दफ्न होंगे कब्र में
हम इस फिज़ा की औलादें हैं
इस फिज़ा में कही खाक हो जायेंगे।

२५.मेरा स्टडि लैंप कल लड़ रहा था मुझसे

मेरा स्टडि लैंप
कल लड़ रहा था मुझसे
शिकायत है कि
मैं रोज मिलता नही उससे
पहले तो देर रात तक
जागकर बातें करता था।
याद है कई
बार घर वाले चिल्लाते थे
लेकिन तुम नही मानते थे
बात उनकी कमल
जलाकर मुझको
उन किताबों के पन्ने पलटते थे।
अब नही रहा
वो रिश्ता
मोबाइल के आने पर
मुझसे तो
अब व्यवहार होता है ऐसा
कि मैं जौनपुर का पुराना पुल हूँ।
किताबों पर छनककर
जब मैं उजियारा फैलाता था
तुम्हारे मोबाइल कि किताबों में
वो बात कहाँ
उसकी रोशनी तो आँखों में चुभती है।
वो होल्डर मेरा
अब कुछ ठीक नही रहता
गल गए हैं तार मेरे
थोड़े तुम्हारे शरारती चूहे ने कुतर दिए हैं
गिन रहा हूँ
अंतिम सांसें मैं
किसी दिन घरवाले भंगार में बेच देंगे
कभी समय मिले तो आना मेरी तरफ।

२६. चलो एक क़स्बा बसाएँ

चलो काटे कुछ जंगलों को
उजाड़े बसेरा बेजुबानो का
लगाकर लोहे की फेन्स
चलो एक क़स्बा बसाएँ।
पाटकर तलैया एक मैदान बनाएँ
खनकर मैदान को नाली बहा दे
पेड़ - पौधों को काटकर
जंगले पर कुछ फैन्सी गमले रख दें
चलो एक क़स्बा बसाएँ।
बरसात के दिनों में
जब बाढ़ आ जाएगी
तब कोसेंगे नसीब को
बह जाएंगे के ख़्वाब सारे
चलो एक क़स्बा बसायें।
दूर शहर से
जिंदगी जीने जाएंगे
जंगल को टेम्पररी घर बनाएंगे
चलो एक एक करके
देहात को ख़ाक करें
चलो एक क़स्बा बसाएँ।

२७. रेल के पत्थर

एक रेल गुजर रही थी
पटरी के पत्थर कांप रहें थे।
रेल गुजरने के बाद
खुश थे पत्थर सारे
गम के बीतने की
खुशियाँ मना रहें थे।
तभी दूर एक और रे
ल के आने की आहट मिली
पत्थर फिर कांपने लगे डर से
रेल फिर गुजरी
उन्हें बिखेर दिया चारो तरफ।
सुबह कुछ लोगों ने
फावड़े से खींचकर
उन पत्थरों को फिर
पटरी की तरफ ढकेल दिया।
पत्थर फिर रेल के इंतजार में हैं
एक दिन वो फूटकर धूल में मिल जायेंगे
इस हवा से पैदा हुए
इस हवा में फिर मिल जायेंगे।

२८. छोटी इमारत

कल एक छोटी इमारत को
अपना हाले दिल बयान करते देखा।
गुरुर था मुझे कुछ सदियों पहले
अपने सबसे ऊंची होने पर
दूर तलक देखती थी
बिना किसी रोक टोक के
वो मेरे चारों तरफ लगी
बड़े - बड़े शीशे की खिड़कियां
चौंधिया देती राहगीरों को
जब वो नजर उठाकर मेरी तरफ देखते थे।
संगमरमर से बनी मेरी सीढियाँ
परसियन स्टाईल का बना झरोखा
मंद - मंद मुस्कराता रहता था
कुछ दिन पहले खड़ी हुई है
एक नई इमारत
या यों कह दूँ, बड़ी इमारत
मुझसे कई मंजिल ऊंची
उसकी तरफ देखने पर
मचक जाती है गर्दन मेरी।
उसके चारों तरफ
सिर्फ शीशे ही शीशे हैं
राहगीर बताते हैं
कुछ बड़े बड़े हिलते कमरे
लोगों को ऊपर नीचे ले जाते हैं
उसपर खड़े होकर देखने पर
मेरा वजूद ऐसा कि कोई इंसान मुफ़लिस।
वो बड़ा साहब
जो कभी मेरी तारीफ में थकता नही था।
अब उसने भी वहाँ
अपना नया घर बना लिया है।
अब मेरी सूरत बयां नहीं करता कोई
लोगों ने देखने से कर दिया इनकार।
मेरा वजूद अब मिट गया हो जैसे

हर बड़ी इमारत
दिन छोटी ईमारत हो जाती है।

२९. सतह पर पनपती काई

सतह पर पनपती काई भी
अब डर रही है
सूरज ज्यों ज्यों बढ़ेगा
उसका वजूद खत्म होगा।
पनपती काई के नीचे
कुछ जलचरों का आशियाँ है
उनके घर की फिक्र भी
अब बढ़ने लगी है।
चमकता सुरजा
जो खुशियों को लेकर आता है
काई के जीवन में तो
बस दुख भर देगा।
अभी तो कुछ दिन पहले ही
संजोया था घर उसने अपना
बड़ी जतन से ताना था
कुछ सुनहरी यादों को छत पर।
बरसात ने खूब भिगाया उसे
ढकेला कई बार यहाँ से वहाँ
काई ने छोड़ा नही
संघर्ष जीवन का।
ठंड के दिन अच्छे गुजरें
जलचर भी
उसे तैराते
रोज नई नज़्में सुनाते।
लेकिन
सतह पर पनपती काई भी
अब डर रही है
सूरज ज्यों ज्यों बढ़ेगा
उसका वजूद खत्म होगा।

३०. बहता हुआ झरना

वो झरने
जो पहड़ो से गिरते रहते हैं
उन्हें देखा नही
कभी आराम करते
थकते तो वो होंगे
लेकिन मेहनत करते रहते हैं।
सतत जल का प्रवाह
दरकार करता आगे बढ़ने की
उसके हवा में फूटते फव्वारे
गिरने पर चोट करते हैं
कितना उजला है
कितना उजला है
वो काला पत्थर
जो झरने की चोट सहता है
बह जाती मिट्टी सारी
बन जाते
बड़े बड़े गढ्ढे
यदि वो उजला पत्थर
जो वहाँ नही होता।
वही झरने के बगल में
कुछ लताएँ हैं
उन्होंने घेर रखा है झरने को
कई बार बांधकर
उसे रोकने की कोशिश की है
लेकिन वो झरना भी
दुबकर निकल जाता है तेजी से।
कुछ राहगीर उस तरफ आयें तो
उन्हें नहलाता ठंडे पानी से
पिलाता मीठा जल अपना
लोगों को तरोताजा कर देता है।
वो झरने
जो पहड़ो से गिरते रहते हैं
उन्हें देखा नही

कभी आराम करते
थकते तो वो होंगे
लेकिन मेहनत करते रहते हैं।

३१. तस्वीरों से भरी दीवारें

वो तस्वीरों से भरी दीवारें
अब सूनी लगती हैं
फ्रेम टूटे नही
किसी ने उन्हें उतारकर
कोने में रख दिया है
कहते हैं बुजुर्गों के दिन बीत गए।
एक मैं भी उन तस्वीरों में
और साथ मेरे बीबा
एक कमरे के मकान में
हमने जिनको पाला था
वो बच्चे अब हमें
दीवारों पर भी जगह नहीं देते।
तस्वीरों से बदसलूकी
सही नहीं लेकिन
हम फ्रेम से बाहर निकलकर
झगड़ भी तो नहीं सकते।
अब यहाँ कोने में पड़े हैं
इंतजार है किसी दिन
पोता आकर तोड़ देगा फ्रेम को
आजाद हो जायेंगे
खुली हवा में लौट जायेंगे।
वो तस्वीरों से भरी दीवारें
अब सूनी लगती हैं
फ्रेम टूटे नहीं
किसी ने उन्हें उतारकर
कोने में रख दिया है
कहते हैं बुजुर्गों के दिन बीत गए।

३२. एक बूँद की जिंदगी का सफर

एक बूँद की जिंदगी का सफर
बिछड़ता हैं अपनों से फिर आकर मिलता है
कहीं पोखरे से भाँप बनकर
आकाश की ज़ानिब बढ़ता है।
रहता गगन में बादलों के अंदर छिपकर
विचरण करता हवा के रथ पर
फिर बोझील होते बादलों से विदा लेता
और आकर टप से पोखरे में पड़ता है।
कभी ओस बनकर
सरकता पत्तों की गरदन से
सतत चलता रहता है
बदलते मौसम के साथ
दशा और दिशा बदलता है।
एक बूँद की जिंदगी का सफर
कुछ कुछ मेरी आत्मा सा है
हर रूप का आलिंगन करता
जीवन को सतत जीता है।
एक बूँद की जिंदगी का सफर
बिछड़ता हैं अपनों से फिर आकर मिलता है
कहीं पोखरे से भाँप बनकर
आकाश की ज़ानिब बढ़ता है।

३ ३. ख़्वाब बुझे नही हैं पूरी तरह से

ख़्वाब बुझे नही हैं पूरी तरह से
लेकिन फिर भी उनको दफना दिया
उनकी सिहरन से तड़पता था मन
वो रोज उठने की कोशिश में
घाव को नासूर कर देते थे।
ख़्वाबों को जीने में कई दुसवारियाँ थी
उन्हें साबित करने के लिए
मुझे तोड़ने पड़ते कुछ रिश्ते
जिन्हें मैंने बड़ी मुश्किल से संजोया था।
ख़्वाबों का मुझपर कर्ज़ था
इसलिए दफनाने से पहले
उन्हें चूमा कलम से मैंने
ख़्वाब बुझे नही हैं पूरी तरह से
लेकिन फिर भी उनको दफना दिया।

३४. गमों को आंगन में बिखरे देखा

बहुत दिनों बाद
जब पुराने घर पहुँचा
तो कई गमों को
आंगन में बिखरे देखा।
कहाँ रहते हो कमल?
एक छोटे गम ने पूछ लिया
उससे मैं पहले नही मिला था
जब बात बढ़ी तो पता चला
उसके दादा के साथ
मैंने कुछ वक्त बिताया है।
वो नन्हा गम बताने लगा कि
दादा जी रोज मेरी बातें करते थे
वो अपनी साईकिल ना हो पाने का गम
इस उम्र तक मेरा साथ देगा
यह सोचकर तो अब अच्छा लगता है।
कुछ और गम भी बिखरें हैं
एक गम तो आखरी सांसें गिन रहा है
शायद वो मेरे गाँव न लौट पाने का गम है
अब जो मैं लौट आया हूँ
लगता नहीं वो कुछ और दिन जी पाएगा।
एक गम और है जो जन्म ले रहा है
पनपने पर पता चलेगा
वो क्या लेकर आया है
जिंदगी से मौत का सफर
ये गम ही आसान करतें हैं।
बहुत दिनों बाद जब पुराने घर पहुँचा
तो कई गमों को आंगन में बिखरे देखा।

३५. टीवी से उधड़ते रिश्ते

वो कबूतर जो रोज मेरी छत पर आते थे
आज दिखे नहीं
वो टीवी का जो एन्टिना लगाया है
उससे चकमा खा गए होंगे।
टीवी ने कई रिश्ते उधेड़ दिए
लोग साथ बैठकर तकते हैं डब्बे में
उन्हें फुरसत नही कुछ बातें करने की।
वो बेसुरे गीतों का खेल
जिसमें सब मिलकर सुर लगाते थे
अब कोई खेलता नहीं
दादा जी की वो मीठी गालियाँ
फिल्मी गानों की तर्ज पर
वो दब गई है टीवी की आवाज में।
धीरे-धीरे लोगों को
टीवी के किरदार याद हो रहें हैं
अब फोन पर भी बात करते हैं तो
उन किरदारों का जिक्र होता है।
कबूतर आज नही तो कल
फिर से छत का अंदाज समझ जायेंगे
लेकिन
वो उधड़ते रिश्ते अब फिर जुड़ ना पायेंगे।

३६. आज अलमारी साफ करते समय

आज अलमारी साफ करते समय
कुछ पुराने चिथड़े निकल आए
कभी ये भी सपनें हुआ करते थे।
पुलिस वाला वो लिबाज़
जिसे मैं पहनकर घूमता था
सारे मोहल्ले में दरोगा बनकर
और
कंधे पर लटकती सीटी
जिसे बजा बजाकर
मोहल्ला सिर पे उठा लेता था
अब वो लिबाज़ फट गया है।
एक स्वेटर मिला
जिसे नानी ने बुनकर भेजा था
किसी ने उसे उधेड़ने की कोशिश की है
लेकिन नानी के प्यार की गिरहें
उधेड़ नही पाया।
एक टूटा हुआ खिलौना मिला
वो सैनिक जो बंदूक तानकर चलता था
सिर अलग हो गया था सैनिक का
लगता है बंद अलमारी में
पहरेदारी करता था
किसी दुश्मन से
मुठभेड़ में शहीद हो गया।
कुछ कागज के पुर्जे हैं
खत लगते हैं माँ ने जो लिखे थे
एक तार भी है
जिसने रुला दिया था मुझको।
आज अलमारी साफ करते समय
कुछ पुराने चिथड़े निकल आए
कभी ये भी सपनें हुआ करते थे।

३७. बेल का गुमान

वो जो बेल जमीन पर पड़ी रहती थी
अब छत के ऊपर से
जमीन की घासों को चिढ़ाती है
बुलाती हैं घासें उसे खेलने को
पुराने दिनों के किस्से सुनाने को
लेकिन बेल का तरीका वो नही रहा
वो तो अब ऊपर है
उसका गुमान उससे भी ऊपर।
कहती है नीचे आकर मैं गंदी हो जाऊंगी
फिर छत पर मिट्टी के धब्बे लगेंगे
छत का मालिक
मुझे काटकर ख़ाक कर देगा
एक छोटी सी घास ने कहा
अरे गैरत है कि नही तुझमें
पहले भी जब तू जमीन पर रेंगती थी
हमने कभी मिट्टी नहीं लगने दी तुझे
तेरे पत्तो के फाए चुभते थे हमें
लेकिन तेरी दोस्ती में हमने आह तक ना की।
बेल अब भी अपने जगह से ना हिली
कुछ दिन बीत गए
दिवाली में छत की सफाई में
उस बेल को जड़ से काट दिया
उस बेल का गुमान अब
सूख सूखकर उड़ता हैं हवाओ में।

३८. मेरे प्यारे गाँव

कहाँ अब
वो गाँव की मिट्टी
यहाँ तो डामर की सड़के
गिरने पर घुटने छिल देती हैं।
बरसो पहले
जब धम्म से गिरा था
दर्द तो हुआ था
हड्डिया नहीं टूटी थी।
यहाँ शहर में तो
एक बार फिसल गया
तो कई दिनों तक
पट्टी बांधे फिरता था।
वो जो अँधेरी रातों में
कोटर के कीड़े किरकिराते थे
उन्हें अब यहाँ
हॉर्न की आवाज ने
दबा दिया है।
वो जो तलईय्या
में छलांग लगाकर
पोखरा में नहाते थे
अब शॉवर के
फव्वारों में बदल गए हैं।
वो जो जला कर चूल्हा
लिट्टी और आलू का चोखा
बनाती थी अम्मां
और
साथ में नेउरा भाय की
कहानी सुनती थी
वो मजा नहीं है
बर्गर पिज़्ज़ा और
शोर मचाती टीवी में।
हर बार सोचता हूँ
अब की आऊंगा

लेकिन
अब लगता नहीं कभी
आ पाउँगा
राख जो मेरी आएगी
उसे सीने से लगा लेना।
मेरे प्यारे गाँव
मैं तो तुझको
हमेशा याद करता हूँ
तू मुझको मत भूला देना।

३९. चूहा

पिछले महीने
एक शर्ट ख़रीदी थी
पुरे २५०० रुपये चुकाकर ।
एक चूहा शरारत कर गया
शर्ट को इतने जगह से काटा
की रफ्फू वाले ने भी
मना कर दिया।
वो चूहा हमेशा से शैतानी
करता आया
कुछ न कुछ
रोज काट देता है।
पिछले पंद्रह दिनों से
दिखा नहीं किसी कोने में।
आज शाम को
जब उससे फिर मिला
मैंने कहा भाई
कहा थे इतने दिन
चूहा उदास बैठा कुछ न बोला।
मेरे सवाल फिर दोहराने
पे बोल पड़ा
किसी ने मेरे बेटे को जहर
खिला दिया।
तुम इंसान भी गजब हो।
हमारे घर में आकर
अपना घर बना लिया।
अब जब हम - तुम्हारे
घर में आते है तो
हमें जहर खिला देतो हो।
हमें हमारे घर से भागकर
अपने घर में आने पर
सजा देते हो।

४०. सन्नाटा और अँधेरा

आसमां कितना साफ है
दूर तक सन्नाटा पसरा हुआ है
अँधेरा भी जैसे उजाला फैला रहा है।
क्या वक़्त यूँही थम सकता है
समा के बिना
क्या परवाना जल सकता है?
समझ न पाओगे
मेरी बातों को तुम
तुमने हमेशा
उजाले से प्यार किया
तुमने हमेशा
अँधेरे का तिरस्कार किया।
आसमां कितना साफ है।
दूर तक सन्नाटा पसरा हुआ है।
अँधेरा भी जैसे उजाला फैला रहा है।

४१. मौके के फँसने का इंतजार

समय के तालाब में,
कांटे लगाकर,
मौके के फँसने का इंतजार ,
कर रहा हूँ।
जो मौके कांटे के पास
आते हैं,
वो बड़े तैराक लगते हैं,
फँसते नही कांटे में,
सरककर भाग जाते हैं।
कुछ मौकों ने तो
पहचान लिया है कांटा,
चिढ़ाते हैं मुझे,
मुँह बिराकर भाग जाते हैं।
पता नहीं
कब फसेगा मौका कोई,
कांटे भी अब जंग खाकर
बेकार होने लगे हैं।
वो रस्सी जो कांटे को
डंडी से बाँधती थी,
वो भी अब कुछ कुछ
कमजोर होने लगी है।
चलो कोई नही,
यदि ना मिल पाया मौका,
तो दिल को इस बात से समझा लेंगे,
मौके अच्छे तैराक थे
और हम कमजोर शिकारी।

४२. एक कविता का जन्म

एक कविता ने
बरसात की बूँदों के बाद,
मिट्टी से बाहर
झाँककर आँखें खोली,
धीरे - धीरे खड़ी हुई वो
और फिर पंख फैलाए।
हवा को पसंद नही आया
उसका होना,
अपने थपेड़ों से
रोज उस कविता को
गिराने की कोशिश करती।
कविता भी रोज
गिरते-पड़ते खड़ी हो जाती,
धीरे – धीरे बढ़ने लगी वो
आकाश की जानिब।
अब हवा उसके
साथ खेलने लगी,
कुछ दिन पहले
कुछ लोग काट गए
उस कविता को।
हवा को मैंने यार के
बिछड़ने पर
आँसू बहाते देखा।
फिर होगी बरसात,
अब उस पल का इंतजार है,
जब एक नई कविता
फिर जन्म लेगी।

४३. चलो दीप जलाते हैं

काका के दरवज्जे पर
बम फोड़ेंगे,
मस्ती के पिछले रिकार्ड तोड़ेंगे,
चलो दीप जलाते हैं,
दो चार को हँसाते हैं।
चकरी तेज घुमाते हैं,
राकेट हाथ से उड़ाते हैं,
चलो दीप जलाते हैं,
दो चार को हँसाते हैं।
मिठाई खुब चबाते हैं,
नमकीन दबाकर खाते हैं,
चलो दीप जलाते हैं,
दो चार को हँसाते हैं।
शुभ दिवाली चिल्लाते हैं,
मस्ती में धूम मचाते हैं,
चलो दीप जलाते हैं,
दो चार को हँसाते हैं।
धुंए का जहाज बनाते हैं,
आग को आँख दिखाते हैं
चलो दीप जलाते हैं,
दो चार को हँसाते हैं।

४४. दरख़्तों ने भी अब विद्रोह किया

दरख़्तों ने भी अब विद्रोह किया है,
कब तक धूँआ फूँककर फेफड़े जलाएंगे।
जब तुम्हें फिक्र नही है अपनी,
हम कब तक दमे का मर्ज सहते जाएंगे।
लगते थे कुछ फल हमपर,
अब वो भी बेमौसम गिरते जाएंगे।
यदि ना बदली अपनी आदत,
हम भी सूखकर एक दिन मर जाएंगे।
कुछ फिर पनपने की कोशिश करेंगे,
कुछ पनपते ही कुर्बान हो जाएंगे।
ताकीद कर रहें तुमसे संभल जाओ,
बस अब हम अपने फेफड़े नहीं जलाएंगे।

४५. वीर सैनिक

सुन हमला देश के ऊपर,
बंदुक उठा चल देता हूँ,
है मौत का गम किसको,
मैं खून धरा को देता हूँ।
है कफ़न सर पे तना हुआ,
दिल में देशप्रेम भर लेता हूँ,
दुश्मन को अपनी चीख से
राख में ध्वस्त कर देता हूँ।
लौटता हूँ तमगा वीरता का लेकर,
कभी जान देश पर देता हूँ,
तुम डरना नहीं मेरे देश के लोगो,
मैं पहरा सरहद पर देता हूँ।
सुन हमला देश के ऊपर,
बंदुक उठा चल देता हूँ,
है मौत का गम किसको,
मैं खून धरा को देता हूँ।

४६. भीग गए, बारिश से क्या डरना

बेटा मैं यहाँ बहुत खुश हूँ,
तुम भी वहाँ खुश रहना,
सत्य के पथ पर चलना,
असत्य से लड़ते रहना,
अब जब भीग गए हो तुम,
तो बारिश से क्या डरना।
संकट मिलेंगे तुमको,
विपदाओं से लड़ते रहना,
विजय पताका देर से सही,
आकाश में लहराते रहना,
अब जब भीग गए हो तुम,
तो बारिश से क्या डरना।
मिलेंगे दुश्मन बनकर दोस्त,
कपट करेंगे, छलेंगे तुमको,
डगमग और पथविचलित होकर भी,
आगे ही तुम बढ़ते रहना,
अब जब भीग गए हो तुम,
तो बारिश से क्या डरना।
सत्य पुकारेगा तुम्हें,
असत्य पथ भ्रमित करेगा,
लोग कहेंगे पीछे हटने को,
तुम मन की सुनकर चलते रहना,
अब जब भीग गए हो तुम,
तो बारिश से क्या डरना।

४७. सत्य बड़ा बिगड़ैल है

चला है सत्य दौड़ लगाने,
असत्य से फिर हार जाएगा।
पिछली बार जो गिरा था मुँह के बल,
सत्य उस हार को भूल गया,
उसे जिस तरह रौंदा था असत्य ने,
सत्य उस मार को भूल गया।
क्यों भूल जाता है सत्य,
दिन उसके कब के लद गए,
असत्य ने जो वादे किए,
वो सत्य से आगे बढ़ गए।
सत्य समझाने पर नहीं मानेगा,
सत्य पुनः दौड़ लगाएगा,
सत्य पुनः धूमिल होकर कराहेगा,
सत्य पुनः पराजित होकर,
सत्य के पथ पर जाएगा।
सत्य बड़ा बिगड़ैल है,
उठकर फिर से लड़ने जाएगा।

४८. कल-कल करती नदी बह रही है

उछलती-कूदती नदी
अपने जीवन से संघर्ष कर रही है।
हजारों बंधाए है मार्ग में,
उनपर सरल चल रही है।
पहाड़ो से गुजरती,
मैदानों में पसरती बढ़ रही है।
बरखा की ऋतू में
नदी मोरनी की तरह खूब इठलाती है।
लेकिन अपने किनारे बसी
कई जिंदगियो को भी बहा ले जाती है।
परंतु यह नहीं भूलना कि नदी की ममता ने
लाखों लोगो को जीवन पहुँचाया है।
मार्ग में आने वाली
बँधाओ से डटकर लड़ती है।
कभी रुकती नहीं
अड़चनों में सतत चलती है।
प्रवाह इसका खुद ब खुद
राह बनाता चलता है।
कल-कल करती नदी
मेरे सामने से बह रही है।।

४९. चिल्हरुवा क बियाह

चिल्हरुवा क बियाह उकरे,
भौजी के बहिनी से ठिकाय गएल।

बियाह क तारीख सुनतै
चिल्हरुवा जैसे पगलाए गएल।
सूट सिलवलेस टाई वाला,
जोड़ा जामा भुलाय गएल।
घोड़ी पर बैठ चिल्हरुवा
ओकर कान उचारै लागल।
घोड़िया एक दाये पटक दिहलेस,
चिल्हरुवा क मति भरमाय गएल।
मारुति में बैठ चिल्हरुवा
ससुराजी के दुवारे आएल।
पाँव-पुजावत की चिल्हरुवा
ससुर जी के देख घबराए गएल।
हौले - हौले पानी डाल के
ससुरजी पाँव धोवत हौंवे।
चिल्हरुवा समझ गएल आपन विपत
हमरे पर धीरे - धीरे छोड़त हौंवे।
कोहबर में चिल्हरुवा
मेहरारून से घेराय गएल।
खिचड़ी खावत कईन चिल्हरुवा
चैन क ज़िद कय देहलेस।
मेहरारू अंदर से इशारा किहलेस,
चिल्हरुवा चुप्पे बुताय गएल।

५०. नज़्मों से ही तो बने रिश्ते सारे

नज़्मों से ही तो बने रिश्ते सारे,
कुछ हल्के हवा की तरह,
कुछ फूले बादर की तरह,
कभी टिमटिमाते,कभी बुत्त हो जाते,
नज़्मों से ही तो बने रिश्ते सारे।

५१. चाँदनी छत पर अकेले टहलते

चाँदनी छत पर अकेले टहलते,
मेरे आने का इंतजार करते,
ठिठुरति ठंड में
मेरे याद के कंबल ओढ़े,
मेरे आने का इंतजार करते,
थककर लौट जाएगी।

५२. आज एक नए सफर पर निकलना हैं

आज एक नए सफर पर
निकलना हैं,
आज फिर कुछ अपने
पीछे छूट जाएंगे।
वो पान वाला बनवारी,
कितने प्यार से
कत्थे और चूने को मिलकर
पाना लगाता था।
चाय की दुकान पर
घंटों बैठे रहना,
वहाँ जो चाचा जी एक आते थे,
अपनी बहु की बहुत बुराइयाँ
बतियाते थे।
कुछ पेड़ भी नाराज हैं,
जिनके नीचे बैठकर
मैं लिखता था,
उन्हें अब कौन नई नज़्में सुनाएगा।
वो शर्मा नाई,
जो हर बार खत गलत कर देता था,
जाने के नाम पर
उसकी आँखें डब डबा गई।
वो मंदिर, वो गिरजाघर,
वो मस्जिद की दीवारें,
बहुत खुश होंगी,
आपस में बतियाती थी,
जाने किस धर्म का नास्तिक है,
कभी हमारी तरफ रुख नहीं करता।
शायद आप मेरे रिश्तों का
जिक्र ढूंढ रहें होंगे,
उन्हें तो उस दिन ही
अलविदा कहा दिया था,
जिस दिन सफर का समान बांधा था।
आज एक नए सफर पर
निकलना हैं,
आज फिर कुछ अपने

पीछे छूट जाएंगे।

५३. मेरी प्यास बड़ी है

गर्मी के दिन हैं,
पंक्षी प्यासे हैं ,
भटक रहे हैं
इस डाल से उस डाल।
इंसान हूँ मैं,
मेरी प्यास बड़ी है,
प्यास है मुझे सोहरत की ,
प्यास है मुझे नाम,
मनमानी की।
प्यास नहीं बुझेगी,
मेरी पानी से ,
पंक्षी पानी से
प्यास बुझाते हैं।
इंसान हूँ मैं,
मेरी प्यास बड़ी है,
सात समन्दर फिरने की प्यास,
लोगो को नीचा दिखने की प्यास,
दौड़ के भीड़ से
आगे निकल जाने की प्यास।
गर्मी के दिन हैं,
पंक्षी प्यासे हैं ,
भटक रहे हैं
इस डाल से उस डाल।

५४. लगता है फिर कोई त्यौहार आया है

लड़िया सज रहीं हैं सड़को पर,
भूखे बच्चे बेचते समान,
रंगदार बाजार से चंदा ले रहे हैं,
डाकिया घर घर फिर रहा है,
मातम छिप गया है उजालों में,
माँ तक रही रस्ता बच्चों के आने का,
सिसकियाँ ले रहा हूँ कोने में,
लगता है फिर कोई त्यौहार आया है।

५५. मरने पर मिलेंगे

आज उस पेड़ को
कटते देखा,
कुछ महीनों से सुखकर
बस खड़ा था,
उसके चारों तरफ जो दीवारें थी
वो भी गिर गई थी,
अब उसे काटकर
एक दरवाजा बनाने वालें हैं।
एक ही उम्र के थे
हम दोनों, साथ बढ़े
उसकी बड़े जतन से
पहरेदार रखवाली करता,
ना आने देता
उसकी तरफ लोगों को,
खरोंच का डर था और
उसके बहेक जाने का।
धीरे धीरे जब बड़ा हुआ
और कुछ फल लग गए
उसपर
तो उसका रूप ऐसा
जैसे हो कोई अप्सरा
इंद्र के आंगन की।
मैं हमेशा
उससे मिलना चाहता था,
लेकिन कभी मिल न सका,
धर्म एक सा ना था हमारा,
और जड़ें मेरी,
मुझे दबाकर रखती।
मैं तो तैयार रहेता
आँधियों के लिए,
फेंक देता अपनी कुछ टहनियाँ
और पत्ते उसकी तरफ,
उसे हमेशा डर रहता,

कही देख न ले चौकीदार
मेरी हरकतों को,
और बना दे और भी ऊंची दीवार
जहाँ से हम ना दिखें।
एक बार कुछ पक्षियों को
कहते सुना था,
उसने भी मुझसे
मिलने की कोशिश की थी,
मिलने की कोशिश पर
पहरेदार ने काट दी
डालें उसकी,
और पत्तों की हरियाली को
झाड़ दिया।
कुछ दिनों बाद
मैं भी कट जाऊँगा,
और उस दरवाजे का
मोहारा बनूंगा,
जहाँ उसे लगाने वालें हैं,
जीते जी तो ना सही मरने पर
हम साथ आने वाले हैं।

५६. अम्माँ का चेहरा

जब मैं छोटा था तो अम्माँ
रोज सुबह जगाती थी,
हर दिन उठकर
उसका ही चेहरा नजर आता था,
गालों को खींचकर
बिस्तर से उठाती थी।
धीरे - धीरे जब मैं बड़ा हुआ,
कभी - कभी अम्माँ का चेहरा
सुबह नही दिखता था,
वो दिन हमेशा बुरा ही कटता था।
एक दिन जब छोटे चाचा का
चेहरा देख लिया था,
मास्टर जी ने डांट बताई थी,
तब से रोज सुबह उठकर
अम्माँ का चेहरा ढूँढ़ा करता था।
एक रोज सपने पनप रहे थे,
जब नींद से जागा तो
अम्माँ मुस्कुरा रही थी,
गया जब साहब को मिलने,
तरक्की सलाम फरमा रही थी।
अब दूर देश से जाना था,
अम्माँ का साथ नामुमकिन था,
अम्मा से अब दूरियाँ
बढ़ती जा रहीं थी।
उस रोज सफर में
खुद पर गुस्सा आ रहा था,
क्यों देखा उस दिन अम्माँ का चेहरा
सोचकर पछता रहा था।

५७. तोड़ दो बंधन

तोड़ दो बंधन,
स्वच्छंद हो
बह चलो मेरे साथ,
एक तराना गाएंगे,
एक फसाना बनाएंगे,
तोड़ दो बंधन।
तोड़ दो बंधन,
सोचो ना अंजाम,
एक डोर को छोड़,
पतंग बन जाएंगे,
भले न हो मंजिल का पता,
हवा में उड़ते जायेंगे,
तोड़ दो बंधन।
तोड़ दो बंधन,
तो रंग नया होगा,
उमंग नया होगा,
जीवन नया होगा,
ना डर हार का होगा,
ना गम ना जीत पाने का ,
तोड़ दो बंधन।

५८. वो रात फिर जीना है

वो कोटरों से किर किर की आवाज,
वो गुजरना पगडंडी पर से शाम के वक्त,
रात के अंधेरे में दरख्तो के साये से डरना,
बेना हौक कर हवा को चेहरे से मिलाना,
वो मुंज-बांस से बनी खटिया पर सोना,
रात का वो सन्नाटा,
निरीह आँखों से तारों को तकना,
रात को सोते वक्त निमकोईय्या का गिरना,
बहुत कुछ है बताने को,
बहुत कुछ है जो याद आता है,
यहाँ तीन रुम के मकान में कैद हो गया हूँ,
कभी आजाद हुआ तो वो रात फिर जीना है।

५९. वो नमाजी

वो नमाजी जो पांच वक़्त की
नमाज पढ़ता था,
कल दहशतगर्दी के
इल्जाम में पकड़ा गयाI
चढ़ाकर टखनों तक पैजामे
जो इस्लाम कहता था,
सुना है बेआबरु कर रहा था
कमसिन परियों कोI
दाढ़ी बढ़ाकर वो
दीन बनता फिरता था,
अंधेरों में मय उठाकर
नाचता बेहयाओ के साथ थाI
जिसने कलमा पढ़ा
मजहब के नाम पर,
इंसानियत को बाजार में
नीलाम कर रहा थाI
रोजा खेलता था वो
नमाजी बेगुनाहों के खून से,
क्योंकि दिन में वो
लोगों का कत्लेआम करता थाI
है काफ़िर कौन?
अब कह पाना मुश्किल था,
नमाजी या फिर वो आदम
जो प्यासों को पानी पिलाता था।
वो नमाजी जो पांच वक़्त की
नमाज पढ़ता था,
कल दहशतगर्दी के
इल्जाम में पकड़ा गया।

६०. वो सितारा

गाँव की अँधेरी रातों में,
वो सितारा उजाला फैलता था।
उजियाले चाँद की रोशनी में,
वो सितारा कहीं छुप जाता था।
मैं जब रात को सोने जाता था,
वो सितारा मेरा मन बहलाता था।
दूर गगन में जुगनू सा टिमटिमाता,
वो सितारा कलाबाजियाँ दिखता था।
मैं लेट लतीफ़ देर से आता,
वो सितारा मुझे समय का एहसास करता था।
मुंबई की तंग गलियों में कही खो गया मैं,
पर क्या वो सितारा अब भी चमकता है?

६१. क्या वो सितारा अब भी चमकता है?

कई दिन बीते मिला नहीं मैं,
क्या वो सितारा अब भी चमकता है?
अँधेरी और उजली रात का एहसास नहीं है,
क्या वो सितारा अब भी चमकता है?
जाने दिन बीते कितने मैंने ऊपर नहीं देखा है,
क्या वो सितारा अब भी चमकता है?
लाईट की चका चौंध में तारे गुम हो गए,
क्या वो सितारा अब भी चमकता है?
सुना टूट के एक तारा गिरा कहीं है,
पर क्या वो सितारा अब भी चमकता है?

६२. सत्य हूँ मैं

सत्य हूँ मैं,
शहर के फुटपाथ पर मिलता हूँ।
अब पुरानी रद्दी की दुकानों पर बिकता हूँ।
तुम सोचते हो,
मैं अखबारों में दिखता हूँ।
लेकिन मैं वहाँ सच्चाई के नाम पर छपता हूँ।
मैं हमेशा झूठे लोगो को दुःख पहुंचाता हूँ।
इसलिए मैं लोगो की जुबान पर,
अब कम ही आता हूँ।
मैं अब झूठ के साथ दौड़ लगता हूँ।
वो अक्सर जीतता,
मैं हर जाता हूँ।
मैं धीरे धीरे झूठ में घुलता जाता हूँ।
शक्कर की तरह,
पानी में विलुप्त हो जाता हूँ।
सत्य हूँ मैं,
शहर के फूटपाथ पर मिलता हूँ।
अब पुरानी रद्दी की दुकानों पर बिकता हूँ।

६३.अम्माँ

कई बार खरोचता हूँ मेरी बिसरी यादों को,
कुछ धूमिल-धूमिल सी तस्वीरें
पर्दे पर चलती फिल्म सी बढ़ती जाती हैं,
मेरे बचपन के भी क़िस्से रहे होंगे,
जो अम्माँ के साथ चले गए।
हम आटें की गोलियां बनाकर खेलते थे,
अम्माँ चिड़िया के आकार की रोटी बनाकर खिलाती थीं,
कभी उसकी नाक बड़ी हो जाती थी,
कभी टांग बड़ी हो जाती थी,
वो नून और तेल चपोत के रोटी खिलाती थी,
मेरे बचपन के भी क़िस्से रहे होंगे,
जो अम्माँ के साथ चले गए।
वो जब उपले थाप करती थी,
हम उसमें आँख बनाया करते थे,
कभी दादा जी, कभी नाना जी
की शकल उकेरा करते थे,
वो नेउरा भाई हम पिछवैं हई
कि कहानी हर रात सुना करतें थे,
मेरे बचपन के भी क़िस्से रहे होंगे,
जो अम्माँ के साथ चले गए।
याद नहीं ठीक से लेकीन,
बीमार मैं हो गया था जब बचपन में,
और अम्माँ ने खाना-पीना छोड़ दिया था,
कभी निहारती मुझे,
कभी बालों में हाथ फेरती,
गीले पानी की पट्टी रात भर जागकर बदलती थी,
मेरे बचपन के भी क़िस्से रहे होंगे,
जो अम्माँ के साथ चले गए।
एक दिन खाण निकलने में
मटकी फूट गई थी,
बाबूजी कान ना उचारे मेरा
इसलिए अम्माँ ने गूढ़की खाई थी,
रोज शाम को अपने हिस्से की मिठाई भी

मुझे खिला देना,
मेरे बचपन के भी क़िस्से रहे होंगे,
जो अम्माँ के साथ चले गये।

६४. किसान

एक बीज बंजर में पनपता है,
जमीन को हरा-भरा कर देता है,
हवा को साफ करता है,
मेघ खींचकर धरा को देता है,
जमीन की मिट्टी बाँध कर रखता है,
फल खिलाता, लकड़ी देता,
एक दिन काट दिया जाता है,
किसान देश का बीज है वो
जिसके कटने पर दु:ख होता
लेकिन पड़ता नही फरक किसी को।
सोचो बंजरभूमि को
हरा ना किया होता उसने,
कहाँ जाते हम पिकनिक पर,
मिट्टी धीरे धीरे बह जाती
और ताल तल्लैया पट जाते,
फलो की मिठास कहाँ मिलती,
घर बनाते किस लकड़ी के,
किसान देश का बीज है वो
जिसके कटने पर दु:ख होता
लेकिन पड़ता नही फरक किसी को।
किसान देश का पेड़ है वो,
जो जल्दी जल्दी बढ़ता है,
जलता दोपहरी में,
पेट भरता लोगो का,
बस बढ़ता है और मिटता है
किसान देश का बीज है वो
जिसके कटने पर दु:ख होता
लेकिन पड़ता नही फरक किसी को।

६५. चलो नज़्में पहनकर कलाईयाँ बजाएँ

चलो नज़्में पहनकर कलाईयाँ बजाएँ,
संभलकर देखना कुछ गिर ना जाएँ,
पिछली बार जो टूटी मिली नहीं थी,
पिछली बार जो पहनी थी,
पुरानी हो गई सारी,
कुछ चटकर टूट गई कब की,
कुछ हरी थी, कुछ लाल रंगों की,
कलाई को दबाती,
कुछ शोर हर पल मचाती,
संजोकर कुछ फ़ीकी नज़्में,
रख दिया शिंगार दानी में,
जब नहीं होते वो तो उनकी याद होती हैं,
दर्द होता है सुनकर
के सुहाग लुटने पर,
ये नज़्में भी दम तोड़ देती हैं,
अभी तो लेकिन हसीन पल हैं,
चलो नज़्में पहनकर कलाईयाँ बजाएँI

६६. सितारों की ठण्डक

गंबूट खरीद लो,
कभी सितारों पर उतरना पड़ा तो,
पाँव जल जाएंगे तुम्हारे,
उसकी ठंडक वैसी नहीं है,
जैसा तुम रोज अपनी नज़्मों में लिखते हो।

६७. बंगालन

कलकत्ता के एक बाजार में,
उस बंगालन को
बालकनी से झांकते देखा,
कभी रहती थी,
हमारे मोहल्ले में,
ना जाने कैसे बदल गई,
उसकी किस्मत की रेखा।
मैं जब शाम को
स्कूल से घर आता,
उसे उसके घर से
कुछ दूर खड़ा पाता,
वो हर बार कहती,
वो हर बार कहती,
आमी तोमाय एक्टा कोथा बोलतेय चाय,
मैं शरमाकर,
सरपट दौड़ लगाता।
एक दिन सड़क किनारे,
खड़ी होकर रो रही थी,
कुछ बोला नही उस रोज,
हाथ की मेहंदी उठाकर दिखा दी,
दिन,समय सब तय था,
बस डोली उठने की राह देखती।
उसकी आप बीती समझनी थी मुझे,
घर से एक रात काम का बहाना,
बनाकर निकल गया
उसके कोठे की तरफ,
बड़ी हिम्मत लगी,
उन लकड़ी की सीढ़ियों पर चढ़ने में,
मैं कदम एक बढ़ाता
और
जैसे सीढियाँ दो कदम बढ़ जाती।
लड़खड़ाते कदमों से,
पहुँच गया उसके कमरे तक,
नजर जो मिली हमारी,

दोनों शर्मिंदा थे इस हालत पे,
केवाड़ की सिटकनी लगी,
हम एक बिस्तर पर बैठ गए।
जिक्र होना था,
होंठ हिलने को तैयार ना थे।
उसके बाबा ने ब्याह को ढोंग किया,
उसे डोली में कोठे के लिए विदा कर दिया,
बाबा को पैसे मिले खूब,
इज्जत पर भी कोई आँच ना आई।
मैं ब्याह करना चाहता था उससे,
मैंने दिन तय किया
उसे ले जाने का,
तारीख पर पहुँचा तो
जनाज उठ रहा था उसका,
एक खत छोड़ा था मेरे नाम,
तुम्हारी बंगालन
तुम्हारे लायक नही रही।
कुछ यो ही
बदल जाती जिंदगी,
समाज में कई अबलाओं की,
बिक जाती हैं,
सरे आम और किसी को खबर भी नहीं होती।

६८. लीची का पेड़

बनारस की गलियों से
कुछ लीची खरीद के लाए थे,
खाने के बाद बीज फेंक दिए
घर के पिछवाड़े,
बरसात के दिनों में
एक नन्हा पौधा जनमा,
धीरे - धीरे बड़ा हुआ,
बाड़ की आड़ में खड़ा रहा,
देता मीठे फल हमको,
और
कुछ पंछियो ने घोसले बनाये थे,
नन्हे बच्चों की
किलकारी से महकता था,
अब धीरे - धीरे सुख रहा है
वो लीची का पेड़,
लगता है पंक्षियों ने भी
अब मजहब के नाम पर
फ़साद शुरू कर दिया है।

६९. गुलज़ार

कविता, नज़्म, या गजल हो
गुलज़ार ही कहता है,
कहानियाँ हो या अठखेलियाँ हो
गुलज़ार ही कहता है,
दिल को छू जाए वो बात
गुलज़ार ही कहता है,
रूह को रुलाए वो राग
गुलज़ार ही कहता है,
प्यार दिल में जगाए वो सार
गुलज़ार ही कहता है,
अँधेरी यादों में उजली किरणों का बयां
गुलज़ार ही कहता है,
गुलज़ार न होता तो
ए दुनिया कुछ रूखी से होती,
बिना जल के मोहब्बत
नीरस सुखी सी होती
बिना शब्दों के कहाँ
मोहब्बत बयां होती ,
बिना साजो के कहाँ
रंगत जवां होती ,
दर्द को मधुर
गुलज़ार ही कहता है,
शब्दों - अल्फ़ाज़ों की कहासुनी
गुलज़ार ही कहता है, गुलज़ार ही कहता है।

७०. क्या पाया तुमने

क्या अब
भी सोचते हो,
जन्नत पाओगे मरने के बाद,
गलत सोचते हो तुम,
अब जहन्नुम मे
ढकेल दिए जाओगे।
वो कपड़े के बने नन्हे जूते
बच्चों के लहू से लथपथ,
मरने के बाद तुम
उन कपड़ों जितना
कफन नही पाओगे।
वो मां की गोद अब सूनी है,
उसके आंगन का मातम
रोज तुम्हें तड़पाएगा।
रात को जब सोना चाहोगे,
बिलखती आवाजो से
डर जाओगे।
तुतलाती जबान बोलता था वो
उसे तो अभी मजहब क्या है
पता भी नहीं था
उसके कत्ल से कौन सा
जिहाद जीत जाओगे।
जिस खुदा के नाम पर,
ये कत्ले आम कर रहे हो,
वो खुद शर्मशार,
ये मंजर देखकर।,
क्या पाया तुमने,
ए कत्ले आम करके?
क्या पाया तुमने,
ए कत्ले आम करके?

७१. असत्य को कर दे सत्य

चल उठ खड़ा हो,
उठा शस्त्र,
पापियों का नरसंहार कर,
लहू कलंक का बहा,
असत्य को कर दे सत्य।
अधर्म सर उठा रहा,
मानव है घबरा रहा,
हिंसा से कतरा रहा,
किसने कहा अहिंसा धर्म है?
चल उठ खड़ा हो,
उठा शस्त्र,
पापियों का नरसंहार कर,
लहू कलंक का बहा,
असत्य को कर दे सत्य।
वो मां का दिल रोता है
बच्चा भूखे पेट सोता है
बहन लाज बचा रही है
धरा त्राहि त्राहि चिल्ला रही,
चल उठ खड़ा हो,
उठा शस्त्र,
पापियों का नरसंहार कर,
लहू कलंक का बहा,
असत्य को कर दे सत्य।
पंगू जनतंत्र अब दिख रहा
कठपुतली सा नाच कर रहा
मानव का सम्मान कहाँ
मानवता का अपमान यहाँ
चल उठ खड़ा हो,
उठा शस्त्र,
पापियों का नरसंहार कर,
लहू कलंक का बहा,
असत्य को कर दे सत्य।
गर्त में तू है जा रहा

सत्य से घबरा रहा
गर्त से निकलने का प्रयास कर
मानवता का उद्धार कर,
चल उठ खड़ा हो,
उठा शस्त्र,
पापियों का नरसंहार कर,
लहू कलंक का बहा,
असत्य को कर दे सत्य ।
मैंने कब अधर्म का पाठ पढ़ाया,
कब तक अपने मन को
अहिंसा अधर्म है सिखाएगा ,
ए पाप है बढ़ रहा
दिन रात बढ़ता जाएगा
तेरे डर से है ए पल रहा
चल उठ खड़ा हो,
उठा शस्त्र,
पापियों का नरसंहार कर,
लहू कलंक का बहा,
असत्य को कर दे सत्य ।
हिंसा और अधर्म एक नहीं,
जा गीता का फिर से पाठ कर,
पाप सहना पाप करने से बड़ा,
अब उठ अंधियारा मिटा,
अन्यथा स्वयं मिट जाएगा,
चल उठ खड़ा हो,
उठा शस्त्र,
पापियों का नरसंहार कर,
लहू कलंक का बहा,
असत्य को कर दे सत्य ।

७२. हरा रंग

खुशहाली का जो प्रतिक था,
आज वो कहर बरपा रहा है,
मज़हब के नामपर हरा रंग,
दुनिया पर कहर ढा रहा है
देखो चारो तरफ हमारे,
देखो चारो तरफ हमारे,
हरा रंग लोगो को
लाल चादर पहना रहा है
चलो मान जाऊं यदि मैं,
आतंक का धर्म नहीं होता,
फिर हर हिंसा के पीछे,
हरा रंग क्यों है होता,
कह सकते हो तुम,
मजहबी आँखों से,
कत्ले आम देखता हूं मैं ,
लेकिन मज़हब की
चादर तुम भी जरा
एक बार आँखों से हटाओ,
खुशहाली का जो प्रतिक था,
आज वो कहर बरपा रहा है,
मज़हब के नामपर हरा रंग,
दुनिया पर कहर ढा रहा है
तुम्हारे बम कहाँ मज़हब देखते हैं,
हिन्दू-मुस्लिम सबको फ़ना करते हैं
कुछ तो सीख लो अपने अशलहो से,
इंसान को न बांटो मजहबी रंगो से,
खुशहाली का जो प्रतिक था,
आज वो कहर बरपा रहा है,
मजहब के नामपर हरा रंग,
दुनिया पर कहर ढा रहा है।

७३. पापा की अंग्रेजी शराब

आज दोस्तों के साथ
जब अंग्रेजी शराब की
बोतल खोली,
तब आँखों से पानी
टपक पड़ा।
कुछ मध्धम
धूमिल यादो में
एक तस्वीर सी
नजर आई
पापा की मेरे।
पीते वो भी अंग्रेजी थे
पर वो थोड़ी सस्ती थी
मेरी पढ़ाई - लिखाई
के खर्च से तनख्वाह
कहा बचती थी।
सोचा जब बड़ा होकर
चार पैसे कमाऊंगा
पापा को
सबसे महंगी वाली
अंग्रेजी शराब पीलाऊंगा।
अब बोतल अंग्रेजी
घर पर रहती है,
पापा की तस्वीर
शायद उन्हें आँखों
से तकती है।
सोचता हूँ एक दिन
मैं भी तो वहां जाऊंगा
चुपके से अंग्रेजी बोतल
पापा को थमा
आगे निकल जाऊंगा।

७४. चिड़िया

वो जो चिड़िया हर शनिवार
दाना खाने आती थी
आज नदारद है खिड़की पर से।
अचानक एक चिड़िया ने
खिड़की पर दस्तक दी,
कहती है हमे भी चाय पिलाओ और
टोस्ट जरा डीप चाय में डुबाकर खिलाओ।
मैं जब चाय लेकर आया
तो उसने मना कर दिया पिने से,
कहेती है दूध की मलाई,
जो तुम्हारी चाय में होती है
वो कहाँ है मेरी चाय में।
टोस्ट उसके सामने रखते ही,
तो झट वो फिर रूठ गई,
कहाँ इसके ऊपर का मस्का,
कहाँ निकाल कर रख दिया तुमने?
अब हर शनिवार खिड़की पर
जाकर बैठ जाता हूँ।
साथ में मलाई वाली चाय
और मस्का ले जाता हूँ।
सुना है की पास वाली बस्ती
के सारे पेड़ काट दिए है
गुनहगारो ने अपने घर बसाने
के लिए मेरी प्यारी चिड़िया के घर
उजाड़ दिए है।
वो जो चिड़िया हर शनिवार
दाना खाने आती थी
आज नदारद है खिड़की पर से।

७५. बारिस को पैगाम

सोचा बारिस के नाम एक पैगाम लिख दूँ।
क्यों तू बरस के थम जाती है?
ना थमे तो कहर ढाती है
तुझसे मोह मुझे बड़ा गहरा है,
तेरे थम थम के बरसने से चमकता चेहरा है,
तूने कई जीवनों को महकाया,
पर तेरी आफत ने कई जीवनों को डुबाया,
तू ना बरसे तो मैं तड़पता हूँ,
तेरे सतत बरसने पर भी मैं तड़पता हूँ,
सोचा बारिस के नाम एक पैगाम लिख दूँ।

७६. सुना है नई सुबह हुई है आज

सुना है नई सुबह हुई है आज,
कही दूर घोर अँधेरा छंटा है।
सोने की चिड़िया डाल पर बैठी,
नए युग का संदेशा दे रही है।
सुना है कालियां खिलखिला रही,
भँवरें भी खुशियाँ मन रहें हैं।
धरती अब हरियाली ओढ़ेगी,
नदियाँ दूध की बाढ़ ले आएँगी।
सुना है खुशियाँ घर घर अब,
दुःख ढूँढ़ते रह जाएंगे।
जाति - पाति का बंधन कमजोर पड़ा,
उन्नति - विकास मजबूत हुआ है।
सुना है नई सुबह हुई है आज,
कही दूर घोर अँधेरा छंटा है।

७७. एक नज़्म सूखकर गिर पड़ी है

एक नज़्म सूखकर गिर पड़ी है,
कुछ दिन में बरसात होगी,
सब कुछ रौनक होगा लेकिन
वो नज़्म फिर जुड़ ना पाएगी
अपनी शाखों से,
नज़्मों के अपने रिश्ते टूट गए सारे।

७८. समंदर से आप ने क्या सीखा है

क्या आप ने समंदर देखा है?
समंदर से आप ने क्या सीखा है?
रोज अपनी सीमा बनाता है,
पीछे हट जाता है,
और फिर आगे आता है,
पीछे हटकर जब आगे आता है,
तो बुराई किनारे छोड़ चला जाता है,
बहुत विशाल है समंदर,
पर दूर चाँद कि रोशनी से शर्माता है,
सूरज उसको दिन भर तपाता है,
शाम होते ही समंदर ठंडा हो जाता है,
ज्वार - भाटा में अठखेलिया दिखता है,
समंदर के उदर में प्यार पलता है,
पानी खारा संसार को जीवन पहुंचता है,
गर्भ में अपने कई जीवनो को पनपाता है,
समंदर प्यार,उदारता,परोपकार सीखता है,
छोटी सी नाव को अपनी गोद में खिलाता है,
विशाल समंदर हमें छोटों से व्यवहार सिखाता है,
अच्छाई अपना कर बुराई त्यागना सिखाता है,
समंदर विभन्नता में एकता दिखलाता है।

७९. पथ

पथ पर रुकता हूँ मैं
आगे चलने के लिए।
रुक कर चलने से
कभी हार नहीं होती।
पथ पर गिरता हूँ मैं
उठता हूँ मैं।
गिर के उठने से
कभी हार नहीं होती।
पथ पर हजारो अड़चने हैं
अड़चनो से लड़ता हूँ मैं।
अड़चनो से लड़ने पर
कभी हार नहीं होती।
कभी अकेले तो
कभी भीड़ में चलता हूँ मैं।
अकेले या भीड़ में चलने से
कभी हार नहीं होती।
जीवन एक सरल प्रक्रिया है
इसमें हजारो उलझने है।
उलझनों को सुलझाने से
कभी हार नहीं होती।
कर्म करता हूँ मैं
मेहनत करता हूँ मैं।
कर्म और मेहनत करने से
कभी हार नहीं होती।
पथ पर रुकता हूँ मैं
आगे चलने के लिए।
रुक कर चलने से
कभी हार नहीं होती।

८०. सितारे

रात वो सितारे ठंड में ठीठूर रहें थे,
देख उनको दिल तड़पता था,
लेकिन इतना बड़ा कंबल कहा?
जो उन्हें जा कर ओढ़ा देता,
कुछ तो ठंड से बुझ गए।

८१. मेरा हमदम

आंसुओ के बहने से नाराज हो जाता है,
हँसने पर वज़ह तलब करता है मेरा हमदम।
झुठ कहने से रुठता है,
सच बोलने कि इजाजत भी नहीं देता मेरा हमदम।
सुख के पल बहुत है जिंदगी में मेरी,
दुःख की घड़ी ढूँढता है मेरा हमदम।
झुठ कहने से रुठता है,
सच बोलने कि इजाजत भी नहीं देता मेरा हमदम।
अच्छ्राई कई सौ है मुझमे,
बुराई ही सिर्फ बताता है मेरा हमदम।
झुठ कहने से रुठता है,
सच बोलने कि इजाजत भी नहीं देता मेरा हमदम।।
मौत कि चाह नहीं मुझमे,
जीने का हिसाब लेता है मेरा हमदम।
झुठ कहने से रुठता है,
सच बोलने कि इजाजत भी नहीं देता मेरा हमदम।।

८२. आत्मा की तलाश

मेरी आत्मा की तलाश में हूँ,
उस शांति की आश में हूँ।
चारो तरफ नीला समंदर है,
मैं अभी भी पानी की तलाश में हूँ।।
हर एक पग पर मानव जीवन है,
मैं तो मानवता की तलाश में हूँ।
सूरज तो चमक रहा है,
मैं तो उजाले की तलाश में हूँ।
बाग़ फूलों से लद गए है,
मैं अभी भी सुघंध के तलाश में हूँ।
मेरी आत्मा की तलाशा में हूँ,
उस शांति की आश में हूँ।

८३. बारिश की फूहार

मदमस्त कर जाती है बारिश की फूहार,
नए सपनें दिखती है बारिश की फूहार,
नयी उमंग भर जाती है बारिश की फूहार,
हरियाली दिखलाती है बारिश की फूहार,
भीनी खुशबु फैलाती है बारिश की फूहार,
मोर से नृत्य कराती है बारिश की फूहार,
सर्द सवेरा लाती है बारिश की फूहार,
मदमस्त कर जाती है बारिश की फूहार।

८४. मन मुस्करता

जब सावन घिर के आता है,
मन मुस्करता है।
जब ठंडी हवा मचलती है,
मन मुस्करता है।
जब समंदर गोते खाता है,
मन मुस्करता है।
जब पंक्षी डालों पर चहकते हैं,
मन मुस्करता है।
जब कोई प्यार का राग बजाता है,
मन मुस्करता है।
जब जीवन मधुर हो जाता है,
मन मुस्करता है।
जब गीत मल्हार गाता है,
मन मुस्करता है।
जब सावन घिर के आता है,
मन मुस्करता है।

८५. मधुर है

कोयल की कूक मधुर है।
पपीहे की पीप मधुर है।
आम की मिठास मधुर है।
आम की खटास मधुर है।
झरने का राग मधुर है।
बहने का अंदाज मधुर है।
माँ का प्यार मधुर है।
माँ का दुलार मधुर है।
बारिश की फुहार मधुर है।
बारिश की झनकार मधुर है।
मौसम का साज़ मधुर है।
मौसम का आगाज़ मधुर है।
गरमी में छाँव मधुर है।
ठंडी में धूप मधुर है।
दुःख में सुख का स्वाद मधुर है
हार में जीत का अंदाज मधुर है।

८६. आँखों मे आँसू आ जाते हैं

हम जब खुश होते है,
आँखों में आँसू आ जाते हैं।
हम जब दुःख मे होते हैं,
आँखों में आँसू आ जाते हैं।
हम जिन्दगी मे जब तनहा होते है,
आँखों में आँसू आ जाते हैं।
भीड़ मे चलते चलते,
आँखों में आँसू आ जाते हैं।
जब एक नया जीवन मिलता है,
आँखों में आँसू आ जाते हैं।
जब जीवन का अंत होता है,
आँखों में आँसू आ जाते हैं।
जीत की ख़ुशी से,
आँखों में आँसू आ जाते हैं।
हर के गम से,
आँखों में आँसू आ जाते हैं।
सुख की घड़ी में,
आँखों में आँसू आ जाते हैं।
दुःख के काँटों की चुभन से,
आँखों में आँसू आ जाते हैं।
बस ऐ सब कहेते कहेते ,
आँखों में आँसू आ जाते हैं।

८७. मौके के फंसने का इंतजार

समय के तालाब में,
कांटे लगाकर,
मौके के फंसने का इंतजार ,
कर रहा हूँ।
जो मौके कांटे के पास
आते हैं,
वो बड़े तैराक लगते हैं,
फंसते नही कांटे में,
सरककर भाग जाते हैं।
कुछ मौकों ने तो
पहचान लिया है कांटा,
चिढ़ाते हैं मुझे,
मुँह बिराकर भाग जाते हैं।
पता नहीं,
कब फसेगा मौका कोई,
कांटे भी अब जंग खाकर
बेकार होने लगे हैं,
वो रस्सी
जो कांटे को डंडुी से बाँधती थी,
वो भी अब कुछ कुछ कमजोर लगती है।
समय के तालाब में,
कांटे लगाकर,
मौके के फंसने का इंतजार ,
कर रहा हूँ।

८८. यादें

यादें लाख बंद करूँ
अलमारी में,
वो निकलकर,
बाहर आ जाती हैं,
खरोंचती हैं मुझे,
ज़ख्म कर जाती हैं,
ताला लाख लगा दूँ,
उनकी कुंजी खोल देती है।
एक बार बंद करके संदूक में,
उन यादों को मैं
समंदर में फेंक आया था,
यादें तैराक हैं,
तैरकर सतह पर आ गई,
हवा में बहती हुई,
फिर पहुंच गई,
मेरे पास।
यादें लाख बंद करूँ
अलमारी में,
वो निकलकर,
बाहर आ जाती हैं,
खरोंचती हैं मुझे,
ज़ख्म कर जाती हैं,
ताला लाख लगा दूँ,
उनकी कुंजी खोल देती है।

८९. चलो नज़्में ढूँढ़े

चलो नज़्में ढूँढ़े,
हर बार महताब तक
जाने की जरुरत क्या है,
घर के कोनों में ढूँढ़ता हूँ,
एक नज़्म
जो दिल को लग जाए,
चलो नज़्में ढूँढ़े।
घर की दीवार पर टंगी,
वो झरने वाली तस्वीर भी तो
नज़्म सुनाती हैं,
अक्सर नाराज रहती हैं,
कमल मैं दिनभर
तेरे सामने रहती हूँ,
तू मुझे देखता नही।
मेरे झरने का पानी
देखना कभी,
याद आएंगे
वो खुशियों के पल,
जो हमने साथ नहीं बिताए,
उसकी बौछार
फूटकर मोती बन जाती है,
मेरी नज़्म कभी तो पढ़ो कमल।

९०. गुम हो गया मैं

आज कई दिनों बाद
गुम हो गया मैं,
अपने ही बनाए मिश्र दायरे में,
एक अजब सा शोरगुल था,
आवाज़ लेकिन कोई नहीं थी,
एक रंगमंच की कहानी थी,
थोड़ी दूसरों की थोड़ी मेरी जुबानी थी,
आज कई दिनों बाद
गुम हो गया मैं।

९१. घाट के उस पार कुछ यार रहते हैं

घाट के उस पार
कुछ यार रहते हैं,
एक दिन घाट पर
जलने मुझे भी जाना है।
वो बाके, वो मतई
सभी दहल पकड़ खेलते हैं,
उनके साथ फिर से
दहला पकड़ खेलने मुझे भी
जाना है।
उन्हें अब छुपकर
चिलम पीनी नहीं पड़ती है,
उनके साथ कुछ कश लगाने,
मुझे भी जाना है।
सुना है वो सालिक,
अब लड़ता नहीं है,
उसके नए बाग़ में,
आम तोड़ने मुझे भी जाना है।

९२. यादों की कतरन

कैंची से काटकर
कुछ यादों की कतरन,
आज एक बेना बनाया है।
सर्दियों में यादों के गर्म
हवा के झोखे
हौले हौले सहलाते हैं।
गर्मियों में मीठी यादें
ठण्ड के बयार से
सिहरन भर देती हैं।
कुछ कतरनें कभी कभी
लोरी सुनाती हैं और
कुछ कतरनें तन्हाई में रुला
जाती हैं।
बेना सिरहाने रखकर
दूर पुराने सफर पर
निकल जाता हूँ।

९३. नेता देश को लूट गया।

जयघोष भारत का करके,
मातृभूमि के नामपर ठगके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
गाँधी जी का नाम जपके,
गोड्से का जयगान करके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
अशांति की मसाल जलाके,
अफ़रा तफ़री का माहौल बनाके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
राम नाम का शंख बजाके,
रावण वाला कृत्य फ़रमाके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
घोटालों की परिभाषा गढ़के,
बेशर्मी का चेहरा चमकाके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
योगी - मुल्ला का रूप बनाके,
ईश्वर - अल्लाह् का खौफ दिखाके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
देशभक्ति के टिकट बाँटके,
वादे सच्चे - झूठे करके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
लोकतंत्र का पाठ पढ़ाके ,
गरीबी का माखौल उड़ाके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
आपतकाल से हमें डराके,

अबोध बालक को भरमाके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
लग्जरी रेल हमें दिखाके ,
स्लीपर में धक्का लगवाके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
बेरोजगारी का जाल बिछाके,
टुनटुना सैंटाक्लॉज़ का बजाके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
बजट में गामा गोल बढ़ाके,
पटरी को विमान पट्टी बताके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
विकास का चिन्ह हमें दिखाके,
वादों को वाई -फाई में लहराके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
मन की बात हमें सुनाके,
अच्छे दिन का लोभ दिखाके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
अहिंसा की झांकी दिखाके,
राज्यों को राज्यों से लड़वाके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
सोना लेकर लोहा देकर,
खाद के बदले जहर बेचके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
एक के बाद एक कमेटी बनाके,
असत्य को सत्य का चेहरा लगाके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
राशन के बदले भाषण देके,
भाषण के बदले तालियाँ लेके,

एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
धर्म -जात चुनाव में बेचके,
आरक्षण में पिछड़ों को ठगके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
सग्गे बाप-चचा को ठगके,
मुहँबोलो के गले रेतके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
मीडिया में ब्रैंडिंग चमकाके,
पेड ट्रेंड के जाम लगाके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
सैनिकों के ताबूत बेचके,
गिरते प्लेन हवा में उड़ाके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
नमकवाले खेत बेचके,
नदी की उजली रेत बेचके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
गटर बनाने का फंड चुराके,
विज्ञापन में राहत कार्य चलाके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
ईमानदार सरकार बताके,
पैसा विज्ञापन में उड़ाके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
रिश्तेदारों की तिजोरी भरके,
वंशवाद से सबको ठगके,
एक साल और बीत गया,
नेता देश को लूट गया।
डायलॉग - नारे हमें बेचके,
लाल बत्ती गाड़ी पर चमकाके,
एक साल और बीत गया,

नेता देश को लूट गया।

९४. सूरज भी ऑफिस जाता है क्या?

दिनभर तपता है
उजियारा फैलाता है,
एक पल न थकता
सतत भ्रमण करता,
कहा जाता है
सूरज ढलने के बाद,
कभी - कभी बाबा पूछती है
क्या सूरज भी रात को
ऑफिस जाता है?
जैसे सुबह निकल जाते हो आप
फिर शाम को थककर लौटते हो,
सूरज भी तो
अपनी बाबा से मिलता होगा।

९५. टॉय लाना

तीन बड़े संदूक भरके
टॉय पड़े हैं बाबा के पास
फिर भी रोज सुबह
घर से निकलते हुए
बाबा तुतलाती ज़ुबान में कह जाती है
मेरे लिए टॉय ले आना।
कभी - कभी लगता है
टॉय की जगह वो यह तो
नहीं कहती कि तुम जल्दी आना
आखिर उसका सबसे पसंदीदा
टॉय मैं ही तो हूँ।
वो जो मेरी आँखों में
उँगली डालकर
घुमाती है मेरी पुतलियों को
और फिर गुस्सा होकर बैठ जाती है
देखती है मुझे छिपती आँखों से।
मैं भी टाँगकर अपने आपको
ऑफिस से घर निकलता हूँ,
घर की बेल बजाकर,
स्वयं को झाड़पोंछकर
खड़ा हो जाता हूँ।
थिरकने को मस्ती की ताल पर
बाबा मेरी कसके जब चाबी भरती है
टॉय मैं ही हूँ जिसे वो रोज
शाम को ले आने को कहती है।

९६. आज एक सितारा टूटते देखा

आज एक सितारा टूटते देखा,
सुर्ख लाल सा चमकता हुआ,
धीरे धीरे उसकी लौ कम हो रही थी,
तुम्हें मांगता इससे पहले बुत गया।
कुछ सितारें हैं जिन्हे मैं रोज तकता हूँ,
कोई जाती रिश्ता नहीं मेरा उनसे
लेकिन वो मेरे अपने बिछड़े
दोस्तों के जैसे चमकते हैं।

९७. वो जो जलाए थे चंद सपने

वो जो जलाए थे चंद सपने तुमने,
उनकी राख
आज भी रूह को छूकर निकल जाती है,
कितनी बार मना किया था तुम्हें,
उस तरफ से आग भभक कर पकड़ लेगी,
लेकिन तुम कहाँ सुनते हो मेरी,
जला दिये सपने जो सालों से सजोए थे,

९८. काश कलम जादुई होती

काश कलम जादुई होती,
जो लिखता वो सच हो जाता,
पहले लिखता पानी
फिर रोटी
फिर सबके खुश होने की कहानी।
काश कलम जादुई होती,
जो लिखता वो सच हो जाता,
पहले लिखता चैन
फिर अमन
फिर सबके प्यार की मेज़बानी।

९९. कुछ दर्द सेकने हैं

थोड़ी आँच बचालो चूल्हे में,
कुछ दर्द सेकने हैं,
जिन्हें मैं चाहकर भी मिटा नहीं पाता
जो लौट आते हैं सर्द मौसम में।
कई दर्दों से तो
मेरा अपना सरोकार भी नहीं
बस किसी ने पता गलत लिखकर
पोस्ट कर दिया,
वो चिटरसा भी बेइमंटी करता है
लाख लौटाने पर भी
मुझे ही उन दर्दों को सौंप जाता है।
थोड़ी आँच बचालो चूल्हे में,
कुछ दर्द सेकने हैं,
जिन्हें मैं चाहकर भी मिटा नहीं पाता
जो लौट आते हैं सर्द मौसम में।